शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020
भाषाई दृष्टीकोण के विशेष संदर्भ में

डॉ. वासुदेव भाऊसाहेब ऊगले
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
मराठी भाषा एवं वाङ्मय विभाग
डॉ. केशव कोंडीबा सोलंके
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग
श्रीमती दानकुँवर महिला महाविद्यालय
जालना, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

आधुनिक शैक्षिक विचारधाराओं और विचार प्रक्रिया के कई पहलुओं के अलावा शिक्षा में गाँधीवादी विचारों की याद आती है। गाँधीजी का मानना था कि स्कूल या कॉलेज में छात्र क्या सीखता है और घर पर क्या अभ्यास करता है, इसके बीच वास्तव में कोई संबंध नहीं है। इसके बजाय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे छात्र जीवन की लड़ाई को सफलतापूर्वक जीत सके। इसी सोच के मद्देनजर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में छात्रों के लिए व्यावसायिक एवं उच्च शिक्षा पर जोर दिया गया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बहु भाषावाद और भाषा जीवन कौशल, नैतिकता और मानव संवैधानिक मूल्यों रचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच, बहु विषयक समग्र शिक्षा आदि की शक्ति को बढ़ाने की क्षमता है, ताकि छात्रों के लिए रोजगार को आसान बनाया जा सके और वह जीवन की समस्याओं के बारे में स्पष्ट और आलोचनात्मक तरीके से सोचने में सक्षम हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षकों को भी द्विभाषी शिक्षण-अधिगम सामग्री सहित द्विभाषी दृष्टिकोण का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती है। उन छात्रों के साथ जिनकी मातृभाषा शिक्षा के माध्यम की भाषा से अलग हो सकती है। इसलिए नई शिक्षा निति में मातृभाषा और कौशल पर अधिक जोर दिया गया है। गाँधी जी का मानना था कि एक छात्र को पहले उसकी मातृभाषा में पढ़ाया जाना चाहिए और उसके बाद राष्ट्रभाषा का परिचय दिया जाना चाहिए। जब वह रुचि और बुद्धिमत्ता का विकास करता है, तो वह अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी सीख सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को भारत सरकार द्वारा लागू किया गया है। यह वर्तमान समय के सामाजिक, आर्थिक और तात्कालिक प्रौद्योगिकी की आवश्यकताओं के साथ मेल खाती है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से नागरिक समृद्धि और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना है।

गाँधी जी ने भाषा को समाज, राजनीति और आत्मनिर्भरता के साथ जोड़ा और इसे एक महत्वपूर्ण साधन माना जिससे लोगों को अपनी समस्याओं का समाधान निकालने में मदद मिले। शिक्षा सीखने को सुविधाजनक बनाने, ज्ञान,

कौशल, मूल्यों, विश्वासों और आदतों को प्राप्त करने की प्रक्रिया है। नई शिक्षा नीति-2020 के मुताबिक 9वीं और 10वीं कक्षा के छात्रों को तीन भाषाएं सीखनी होंगी। यदि उनमें से दो भारतीय भाषाएं हैं, तो 11वीं और 12वीं कक्षा के लिए दो भाषाओं का अध्ययन करना होगा, जिनमें से एक भारतीय भाषा है। भारतीय भाषाओं को स्कूली पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बना दिया गया है। साथ ही छात्रों को अलग-अलग विषय चुनने की आजादी भी दे दी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा के सभी स्तरों में समान अधिगम के लिए प्रतिबद्ध किया है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई पहलुओं को मजबूत किया है। जैसे कि शिक्षकों का प्रशिक्षण, नए पाठ्यक्रम और नए तकनीकी साधनों का अधिगम। साथ में आधुनिकीकरण के लिए कई कदम उठाए हैं। जैसे डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना और तकनीकी उपकरणों का अधिगम कराना और बच्चों को उनकी स्थानीय भाषा में शिक्षा प्राप्त कराने के लिए प्रोत्साहित करना। ऐसे कई पहलुओं के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा व्यवस्था में सुधार करने का प्रयास कर रही है।

प्रस्तावना

21वीं सदी के भारतीय समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का विधेयक पारित किया है। इसका क्रियान्वयन सफल तरीके से किया जाए तो यह नई शिक्षा प्रणाली भारत को विश्व में अग्रणी देशों के समकक्ष खडा करने सफल होगी। ऐसा कई शिक्षा विशेषज्ञ दावा कर रहे हैं। अगर हम इस शिक्षा व्यवस्था को किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखने वाले विद्यार्थियों को समान और सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध कराने के स्तर पर ले जाने में कामयाब होते हैं, तो यह देश की पहली शिक्षा नीति होगी जिसका लक्ष्य हमारे देश के सभी अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने सपना पूरा हो सकता है। स्वतंत्र भारतीय इतिहास में यह तीसरी शिक्षा नीति है। इससे पहले तत्कालीन केंद्र सरकार ने 1968 और 1986 में दो शैक्षिक नीतियों की घोषणा की थी। यह नीति 34 साल बाद आई है। इस नीति के कई मुद्दों और उनके कार्यान्वयन पर इस समय कई मंचो पर चर्चा हो रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

1 महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 सहसंबन्ध का अध्ययन करना।

2 ग्रन्थों के आधार पर महात्मा गाँधी के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।

3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का भाषाई दृष्टि से विश्लेषण एवं स्वरूप का प्रस्तुतीकरण करना।

भारतीय शिक्षा नीति की समीक्षा

डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के गठन के साथ ही भारत में शिक्षा प्रणाली को व्यवस्थित करने का काम शुरू हो गया था। 1952 में लक्ष्मण स्वामी मुदलियार की अध्यक्षता में गठित माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा 1964 में दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में गठित शिक्षा आयोग की अनुशंसाओं के आधार पर 1968 में शिक्षा नीति पर एक प्रस्ताव प्रकाशित किया गया। जिसमें राष्ट्रीय विकास के प्रति वचनबद्ध, चरित्रवान तथा कार्यकुशल युवक-युवतियों को तैयार करने का लक्ष्य रखा गया। सन 1986 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की

गई, जो अब तक चल रही है। इस बीच राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समीक्षा के लिए 1990 में आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में एक समीक्षा समिति तथा 1993 में प्रो. यशपाल समिति का गठन किया गया। नई शिक्षा नीति 2020 भारत की वर्तमान नई शिक्षा नीति है, जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया। सन 1986 में जारी हुई नई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह पहला नया परिवर्तन है। यह नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के.कस्तूरीरंगन समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एनसीऍफ़ द्वारा तैयार की गयी है। At the State level- all states/UTs will first prepare their State Curriculum Frameworks (SCFs) passing through the process of district level consultations, mobile app survey and development of position papers by the State Focus Groups in 25 areas/themes identified as per the NEP, 2020 including ECCE, Teacher Education and Adult Education. These draft SCFs will provide inputs to the development of NCFs."1

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की पृष्ठभूमि

महात्मा गाँधी ने 100 साल पहले ही नई शिक्षा नीति के सिद्धांतों और प्रणाली का सपना देखा था, जिसे आज के समय में पूरा किया जा रहा है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा के माध्यम से ही सत्य, शान्ति और अहिंसा का मार्ग प्रशस्त किया। महात्मा गाँधी ने शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरण पर भी जोर दिया। नई शिक्षा नीति और पर्यावरण पर महात्मा गाँधी के सिद्धांत आज सफल हो रहे हैं। इन्हीं सफलता से भारतीय समाज गतिशील बन रहा है और तकनिकी में रोज नई-नई उपलब्धियों को हासिल कर रहा है।

महात्मा गाँधीजी का शिक्षा सिद्धांत

महात्मा गाँधी ने जीवनभर शिक्षा क्षेत्र में अपने विचार बहुत जगह प्रस्तुत किए थे। उनका शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेकर कई महत्वपूर्ण विचार थे। उन्होने शिक्षा सिद्धांत में अपने आदर्श को और उनके अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया है। "शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि बालक की या प्रौढ़ की शरीर, मन तथा आत्मा की उत्तम क्षमताओं को उद्घाटित किया जाए और बाहर प्रकाश में लाया जाए। अक्षर-ज्ञान न तो शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य है और न उसका आरम्भ। वह तो मनुष्य के शिक्षा के कई साधनों में से केवल एक साधन है। अक्षर-ज्ञान अपने आप में शिक्षा नहीं है। इसलिए मैं बच्चे की शिक्षा का श्रीगणेश उसे कोई उपयोगी दस्तकारी सिखा कर और जिस क्षण में वह अपनी शिक्षा का आरम्भ करे उसी क्षण से उसे उत्पादन के योग्य बना कर करूँगा। मेरा मत है कि इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली में मस्तिष्क और आत्मा का उच्चतम विकास सम्भव है।"2

महात्मा गाँधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण नेता हैं। उनका शिक्षा सिद्धांत अत्यंत अद्वितीय है। उन्होंने इसे 'नैतिक नय' या 'सत्याग्रह' कहा। इस संदर्भ में गाँधीजी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा है, "मैं इस बात का दावा नहीं करता कि मैंने किसी नये सिद्धान्त को जन्म दिया है। मैंने केवल शाश्वत् सत्य को अपने ढंग से जीवन में तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं को हल करने में अपनाया है। मेरा सारा दर्शन, यदि उसे दर्शन की संज्ञा दी जाय,

उसमें निहित है जो कुछ मैंने कहा है। आप उसे गाँधीवाद न कहें, क्योंकि उसमें कोई वाद नहीं है। गाँधीजी का शिक्षा सिद्धांत सत्याग्रह (अर्थात सत्य की ओर प्रयास), अहिंसा (अर्थात अनहता और सद्भावना), सर्वोदय (अर्थात समृद्धि का सामाजिक आदान-प्रदान), निष्कलंकता (अर्थात अध्यात्मिक शोध करना) इन मुख्य तत्वों पर आधारित है।

भाषाई दृष्टीकोण का तुलनात्मक अध्ययन

भाषा सीखना शिक्षा का मूल आधार है, क्योंकि भाषा ही शिक्षा का माध्यम है। बच्चों को प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से प्रदान करना एक सर्वमान्य सिद्धांत है। दुनिया भर में कई अध्ययनों ने अब यह साबित कर दिया है कि एक बच्चा किसी भी ज्ञान को उसके सैद्धांतिक हिस्से को उचित समझ के साथ किसी विदेशी भाषा की तुलना में अपनी मातृभाषा में अधिक आसानी से और प्रभावी ढंग से आत्मसात कर सकता है। लेकिन बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक भारत देश में जहां संविधान के अनुसार (8वीं अनुसूची के अनुसार) 22 आधिकारिक भाषाएं हैं, पूरे देश के लिए एक ही आधिकारिक राष्ट्रीय भाषा नामित करना संभव नहीं था। “गाँधी की नई शिक्षा प्रणाली उनकी अन्य दोनों के मुकाबले महानतम हैं, क्योंकि यह नागरिकों को एक नए समाज को प्रतिष्ठापित करने में सहायक है और सहयोग, प्रेम तथा सत्य के आधार पर एक साथ रहने की बात कहती है।”4

आज के दौर की नई शिक्षा नीति और गाँधीजी के बुनियादी शिक्षा दर्शन का सारांशत: अवलोकन करते हैं, तो उन्होंने शिक्षा पद्धति को सामाजिक, व्यक्तिक, आर्थिक, मनावैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक आधारों पर खड़ा किया है। महात्मा गाँधी ने भाषा को अपने दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना। गाँधीजी के अनुसार शिक्षा से व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता है। साक्षरता केवल शिक्षा प्रदान करने का साधन नहीं है, शिक्षा अपने आपको को बनाने का साधन है।

निष्कर्ष

1 आत्मनिर्भरता और भाषा

गाँधीजी ने आत्मनिर्भरता के माध्यम से भाषा को महत्व दिया। उनका तर्क था कि जब लोग अपनी भाषा का उपयोग करके समस्याओं का समाधान करते हैं तो वे स्वतंत्र और सशक्त होते हैं।

2 आपसी समझ और समर्थन

गाँधीजी ने भाषा को एक साधुता और आपसी समझ का माध्यम माना। उन्होंने अलग-अलग समृद्धि और भाषा समृद्धि के बीच एक नेतृत्वको महत्वपूर्ण साधन माना।

3 अहिंसा और भाषा

महात्मा गाँधी ने अहिंसा का सिद्धांत अपनाया और उन्होंने बताया कि अगर हम अपनी भाषा को सभी के साथ समझदारी और समर्थन का साधन मानते हैं तो हिंसा की जगह शांति और समझदारी से बदलाव हो सकता है।

4 सामाजिक न्याय और भाषा

गाँधीजी ने सामाजिक न्याय की बात की और उन्होंने भाषा को एक न्यायपूर्ण साधन के रूप में देखा। उनका मानना था कि सभी को एक समान भाषाई प्लेटफ़ॉर्म पर होना चाहिए ताकि सभी को अपने विचारों को आज़ादी से व्यक्त करने का अधिकार हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कक्षा 5 तक शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा के उपयोग पर जोर दिया गया है, जबकि कक्षा 8 और उसके बाद तक इसे जारी रखने की सिफारिश की गई है। महात्मा गांधी के शिक्षा

दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच एक सीधा संबंध नहीं है, क्योंकि महात्मा गांधी का समय बहुत पहले था और उनका शिक्षा दर्शन एक अलग काल, सामाजिक संदर्भ और विचारधारा के अंतर्गत थे। हालांकि गांधीजी ने शिक्षा को सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना और उन्होंने अपने विचारों में शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से नागरिक समृद्धि और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 National Curriculum Framework https://ncf.ncert.gov.in/#/web/about?tab=ncf

2 गांधी मोहनदास करमचंद, हरिजन, साप्ताहिक 31 जुलै 1937

3 बालिया जे.एस., शिक्षा के सिद्धांत तथा विधियां, पाल पबिलशर्स, जालन्धर

4 रूहेला, एसपी शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार, आर.लाल बुक डिपोए मेरठ 2004 पृष्ठ 5